मीमांसा दर्शन और शिक्षण विधियाँ

(Mimansa Philosophy and Methods of Teaching)

मीमांसा शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए जिस पाठ्यक्रम की विवेचना की गयी है, उसके लिए निम्नलिखित शिक्षण विधियों का प्रयोग किया जाता है–

1. सूत्र विधि—सूत्र संक्षिप्त एवं सांकेतिक वाक्य या वाक्यांश है। सूत्रबद्ध कथन प्रभावकारी एवं सरल होते हैं। इसके द्वारा शीघ्र स्मरण होता है। प्राचीन काल में शिक्षण की यह एक प्रमुख विधि रही है।

2. उपदेश विधि—इसे प्रवचन विधि भी कहा जाता है। इसमें शिक्षक अपने उपदेश या प्रवचन के द्वारा ज्ञान का स्पष्टीकरण करता है। मीमांसा सूत्र में कहा गया है–"ज्ञानमुपदेशो"।

3. तर्क विधि—मीमांसा दर्शन में किसी तथ्य को सिद्ध करने के लिए तर्क विधि का प्रयोग किया गया है। इस विधि के प्रयोग से चिन्तन-मनन की क्षमता का विकास होता है। मीमांसा दर्शन में छः प्रमाण माने गये हैं–प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, उपमान, अर्थापत्ति और अनुपलब्धि। ये यथार्थ ज्ञान की प्राप्ति के साधन हैं और तर्क विधि को ही बताते हैं।

4. व्याख्या विधि—सूत्रों को स्पष्ट करने के लिए व्याख्या विधि का प्रयोग किया जाता है। विषय को स्पष्ट करने के लिए यह विधि बहुत उपयोगी है, इसमें विषयगत कठिनाइयों और क्लिष्टताओं को बहुत सरलता से स्पष्ट किया जाता है। **महर्षि जैमिनी** के अनुसार–"**आख्या प्रवचनात्। समाख्यानं न तद्वत।**"

5. अभ्यास विधि—मीमांसा शिक्षा की एक प्रमुख विधि अभ्यास विधि है। ज्ञान को स्थायी बनाने के लिए यह विधि बहुत उपयोगी है। अभ्यास के बिना विस्मृति की सम्भावना बनी रहती है। इसके अतिरिक्त मीमांसा में यज्ञ, हवन आदि पर बल दिया गया हैं जिनके लिए अभ्यास की महती आवश्यकता है। मीमांसा सूत्र में कहा गया है–"अभ्यासो कर्मप्रेषत्वात् पुरुषार्थो विधीयते"।

6. क्रिया विधि—मीमांसा दर्शन वैदिक कर्मकाण्ड का समर्थक है, इसके अन्तर्गत यज्ञ, उपासना, आराधना आदि क्रियाओं को महत्त्व दिया गया है, इसलिए शिक्षा में क्रिया विधि को बहुत महत्त्व मिला है। यज्ञ

की क्रिया अकेली नहीं होती, उसके साथ जीवन की अन्य क्रियायें भी व्यावहारिक रूप से जुड़ी होती हैं, अत: मीमांसा दर्शन के अनुसार जीवन की सभी कठिन और सरल क्रियाओं के माध्यम से ही ज्ञान प्राप्त होता है।

मीमांसा दर्शन और अनुशासन
(Mimansa Philosophy and Discipline)

मीमांसा दर्शन के अनुसार मानव जीवन का लक्ष्य धर्म-कर्त्तव्य का पालन करते हुए लौकिक, एवं आलौकिक सुख प्राप्त करना है। सर्वेपल्लि राधाकृष्णन कहते हैं—''सुख ही लक्ष्य है जो मीमांसा दर्शन का अभिमत है। यद्यपि इसका तात्पर्य इस जगत के सुख से नहीं है। पारलौकिक सुख के लिए हमें इस लोक में आत्म त्याग का अभ्यास करना चाहिए। जिन कर्मों का परिणाम दु:ख हो वे धर्म नहीं हैं। जिसके करने के लिए आज्ञा दी गई है वह धर्म है ओर वह हमें सुख की ओर ले जाता है।'' इससे स्पष्ट होता है कि त्यागमय कार्य ही कर्त्तव्य और धर्म है जो सुख देने वाला है और इसकी प्रवृत्ति अनुशासन है। इस प्रकार मीमांसा दर्शन के अनुसार आत्मत्याग, सत्कर्म, सुख की अन्तरानुभूति ही अनुशासन है।

मीमांसा दर्शन आत्मानुशासन और सामाजिक अनुशासन पर बल देता है। इसके अनुसार व्यक्ति को वेद विहित कार्य करने चाहिए। अशुभ और अनुचित कर्म करने से बन्धनग्रस्त होता है। शुभ और उचित कर्मों द्वारा व्यक्ति अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। शुभ और उचित कर्म करने के लिए व्यक्ति में आत्म नियन्त्रण की भावना धर्मनिष्ठ अन्त-प्रवृत्यात्मक भावना और सामाजिक आदेशों के पालन की भावना होनी चाहिए और यह आत्मानुशासन और सामाजिक अनुशासन से ही सम्भव है। यज्ञ विधान भी मीमांसा दर्शन के अनुसार अनुशासन है। मीमांसा दर्शन का प्रायश्चित विधान भी अनुशासन के सम्बन्ध में एक नवीन और व्यावहारिक संकल्पना है। मीमांसा में कहा गया है—''प्रायश्चित विधानाच्च।'' गांधी जी का 'उपवास व्रत' भी आत्मानुशासन के लिए प्रायश्चित कहा जा सकता है। गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर ने भी इस प्रायश्चित विधान का प्रयोग विश्व-भारती में किया था। आत्मानुशासन के लिए प्रायश्चित विधान का प्रयोग निश्चित ही आज की शिक्षा व्यवस्था में किया जाना चाहिए।

मीमांसा दर्शन और शिक्षक
(Mimansa Philosophy and Teacher)

कर्म की विशद व्याख्या होने के कारण मीमांसा को कर्म मीमांसा या कर्मकाण्ड भी कहा गया है। इसमें यज्ञों की विधियों, अनुष्ठानों आदि वेद कर्मकाण्ड सम्बन्धी विषयों का सम्यक् विवेचन किया गया है। अत: शिक्षक और शिक्षार्थी दोनों को कर्मकाण्डी बनना आवश्यक है। शिक्षक का धर्मनिष्ठ होना आवश्यक है। धर्मपरायण और ज्ञानी होकर ही वह अपने शिष्यों को धर्मपरायण और ज्ञानी बन सकता है, उनकी धर्म-जिज्ञासा को पूर्ण कर सकता है, उनमें सदाचरण की भावना पैदा कर सकता है और धर्मकर्त्तव्य तथा अधर्म-कर्त्तव्य का ज्ञान देकर उनको मोक्ष का अधिकारी बना सकता है। मीमांसा के अनुसार शिक्षक को गुणी, ज्ञानी, सदाचारी, ब्रह्मचर्य का पालन करने वाला, कर्त्तव्य और अकर्त्तव्य का ज्ञान रखने वाला, विधि-विधान से यज्ञ करने वाला और अपने शिष्यों का पथ प्रदर्शन करने वाला और अपने शिष्यों का पथ प्रदर्शन करने वाला होना चाहिए। शिक्षक को अपने आचरण से शिष्यों को आचारवान बनाना चाहिए तभी उसे 'आचार्य आचरण योग्य कहा जाएगा।

मीमांसा दर्शन और शिक्षार्थी
(Mimansa Philosophy and Student)

मीमांसा दर्शन के अनुसार शिक्षार्थी को ब्रह्मचारी और धर्मपरायण होना चाहिए। उस त्याग, तपस्या, तितिक्षा का जीवन व्यतीत करना चाहिए। उसमें ज्ञान प्राप्त करने की तीव्र लालसा होनी चाहिए। गुरु के पास

रहकर उसके उपदेशों और प्रवचनों को एकाग्रचित्त होकर सुनना चाहिए और उनका अभ्यास करना चाहिए। गुरु की आज्ञा का पालन करना उसका धर्म होना चाहिए। शिक्षार्थी को कर्म के स्वरूप और महत्त्व का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए। उसे यह ज्ञान होना चाहिए कि धर्मानुसार कर्म ही उचित और शुभ है और धर्म के विरुद्ध किये गये कर्म अनुचित और अशुभ हैं। उसे कर्म को कर्त्तव्य के रूप में करना चाहिए। यज्ञ, हवन, पूजा, उपासना आदि क्रियाओं को उसे सीखना चाहिए और आजीवन उनको व्यवहार में लाना चाहिए। उसे अपने आचरण को उत्तम बनाना चाहिए और श्रेष्ठ संस्कारों को अपनाना चाहिए।

ज्ञानमीमांसा का अर्थ

(Meaning of Epistemology)

"शिक्षा शारीरिक और मानसिक दृष्टि से विकसित स्वतन्त्र, चेतन मानव अस्तित्व की ईश्वर से श्रेष्ठ समायोजन की नित्य प्रक्रिया है जो मानव के बौद्धिक, संवेगात्मक और संकल्पात्मक पर्यावरण में अभिव्यक्ति हुआ है।"

–हार्न

दर्शन की एक महत्त्वपूर्ण समस्या उसकी ज्ञानमीमांसा होती है जिसे ज्ञान का सिद्धान्त भी कहते हैं। आदर्शवाद को ज्ञानमीमांसा दर्शन कहा जाता है और प्रकृतिवाद को तत्त्वमीमांसा का दर्शन कहते हैं। इसी प्रकार प्रयोजनवाद की कोई तत्त्वमीमांसा नहीं वह भी ज्ञानमीमांसा का दर्शन है, परन्तु उस में ज्ञान की व्यावहारिकता को विशेष महत्त्व दिया जाता है। आदर्शवाद के अन्तर्गत ज्ञान के सिद्धान्त को प्राथमिकता अधिक दी गई है और उसका ज्ञान आत्मा और परमात्मा की मीमांसा से सम्बन्धित है। इस अध्याय में तत्त्व मीमांसा के सम्बन्ध में चर्चा की गई है जिसके अन्तर्गत ज्ञान का अर्थ, ज्ञान के स्रोत, ज्ञान सम्बन्धी अवधारणाएँ तथा ज्ञान सम्बन्धी समस्याओं का विवेचन किया गया है। इससे पूर्व ज्ञानमीमांसा का अर्थ भी बताने का प्रयास किया गया है।

दर्शन का यह दूसरा महत्त्वपूर्ण तत्त्व हैं। ज्ञानमीमांसा दर्शन की वह शाखा है जिसमें ज्ञान सम्बन्धी समस्याओं का समाधान किया जाता है। उनकी प्रमुख समस्याएँ इस प्रकार हैं–

- ज्ञान क्या है?
- ज्ञाता और ज्ञेय में क्या सम्बन्ध है?
- क्या ज्ञान की अन्तर्वस्तु बाह्य वस्तु है या वह उससे भिन्न है?
- हम यह कैसे जान सकते हैं कि हमारा ज्ञान वस्तु का यथार्थ ज्ञान हैं?
- ज्ञान की सीमाएँ क्या हैं?
- ज्ञात के स्रोत क्या हैं?

इन प्रश्नों के अतिरिक्त ज्ञान-शास्त्री कुछ अन्य प्रश्न भी उठाते हैं; जैसे–

- ज्ञान का क्या स्वरूप है?
- क्या ज्ञाता का ज्ञान सम्भव है यदि नहीं तो क्या जाना जाता है?
- यदि ज्ञेय एक वस्तु है तो यह वस्तु क्या है?